# सोलह सोमवार व्रत कथा

Solah Somvar Vrat Katha — The Sixteen Mondays Fast Story

## व्रत कथा

एक समय की बात है, भगवान शिव माता पार्वती के साथ भ्रमण करते हुए मृत्युलोक में अमरावती नगरी पहुँचे। वहाँ के राजा ने एक अत्यंत सुंदर शिव मंदिर बनवाया था। उसकी शोभा देखकर शिव-पार्वती वहीं ठहर गए।

एक दिन माता पार्वती ने प्रसन्न मन से भगवान शंकर से कहा — "आज हम चौसर खेलें।" शिवजी मान गए और दोनों चौसर खेलने लगे।

उसी समय मंदिर का पुजारी पूजा करने आया। पार्वती जी ने उससे पूछा — "बताओ, इस बाजी में किसकी जीत होगी ?" पुजारी ने बिना विचारे कह दिया — "महादेव जी की।"

किंतु बाजी माता पार्वती जीत गईं। असत्य वचन से रुष्ट होकर पार्वती जी ने पुजारी को कोढ़ी हो जाने का श्राप दे दिया।

कुछ समय बीतने पर देवलोक से अप्सराएँ उस मंदिर में आईं। पुजारी की दशा देखकर उन्होंने उसका कारण पूछा। पुजारी ने सारी बात कह सुनाई।

अप्सराओं ने कहा — "तुम सोलह सोमवार का व्रत करो। इसी से तुम्हारा कष्ट दूर होगा।" और उन्होंने उसे व्रत की विधि बताई।

पुजारी ने विधिपूर्वक सोलह सोमवार का व्रत किया और सत्रहवें सोमवार को चूरमे का प्रसाद बाँटा। व्रत के प्रभाव से वह रोगमुक्त होकर पहले जैसा स्वस्थ हो गया।

कुछ काल बाद शिव-पार्वती पुनः उसी मंदिर में आए। पुजारी को स्वस्थ देखकर पार्वती जी ने आश्चर्य से कारण पूछा। पुजारी ने अप्सराओं द्वारा बताए सोलह सोमवार व्रत की महिमा कह सुनाई।

माता पार्वती ने भी वह व्रत किया, क्योंकि उनका पुत्र कार्तिकेय उनसे रूठकर दूर चला गया था। व्रत पूर्ण होते ही कार्तिकेय स्वयं लौट आए और बोले — "माता, मेरा मन आपकी ओर कैसे खिंचा चला आया ?" पार्वती जी ने उन्हें व्रत की महिमा बताई।

कार्तिकेय ने भी यह व्रत किया, क्योंकि उनका ब्राह्मण मित्र परदेस गया था और उसका कोई समाचार नहीं था। व्रत पूर्ण होते ही मित्र लौट आया।

उस ब्राह्मण मित्र ने विवाह की इच्छा से यह व्रत किया। घूमते-घूमते वह एक नगर में पहुँचा, जहाँ राजा अपनी कन्या के स्वयंवर का आयोजन कर रहे थे। शर्त यह थी कि जिसके गले में हथिनी माला डालेगी, वही राजकुमारी का वर होगा। हथिनी ने ब्राह्मण के गले में माला डाल दी और उसका विवाह राजकुमारी से हो गया।

एक दिन राजकुमारी ने पति से पूछा — "आपने ऐसा कौन सा पुण्य किया था जो यह सौभाग्य मिला ?" ब्राह्मण ने सोलह सोमवार व्रत की महिमा बताई। राजकुमारी ने भी पुत्र प्राप्ति की कामना से यह व्रत किया और उसे एक सुंदर पुत्र की प्राप्ति हुई।

बड़ा होने पर उस पुत्र ने भी राज्य प्राप्ति की कामना से यह व्रत किया। एक राजा ने अपनी कन्या का विवाह उससे कर दिया और अपना राज्य भी उसे सौंप दिया।

राजा बनने के बाद वह शिव मंदिर में पूजा करने गया और उसने अपनी रानी से भी व्रत करने को कहा। किंतु रानी ने आलस्य किया और व्रत नहीं किया। इससे शिवजी अप्रसन्न हुए और कुछ ही समय में राजा को राज्य से निकाल दिया गया।

बहुत कष्ट सहने के बाद राजा ने पुनः विधिपूर्वक सोलह सोमवार का व्रत किया। शिवजी प्रसन्न हुए और उसे उसका राज्य वापस मिल गया। रानी ने भी अपनी भूल स्वीकार कर व्रत किया, और दोनों सुखपूर्वक रहने लगे।

जो कोई भी श्रद्धा और विधिपूर्वक सोलह सोमवार का व्रत करता है, भगवान शिव उसकी समस्त मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं।

## व्रत विधि · How the vrat is kept

The vrat runs for sixteen consecutive Mondays, most often begun in Shravan. Fast through the day. In the pradosh hours at dusk, bathe and put on clean clothes. Prepare churma from about half a seer of

wheat flour with ghee and gur. Worship Shiva with gugal, bel leaves, chandan, akshat, dhoop and deep. Divide the churma into three parts: offer one to Shiva and distribute the rest as prasad. On the seventeenth Monday, make churma again, share it with everyone present and take it yourself — this completes the vrat (udyapan).